भारतीय भाषाएं और अनुवाद साहित्य

कविता पाटील

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263741

ABSTRACT:

यह शोध पत्र भारतीय भाषाओं और अनुवाद साहित्य के महत्व पर प्रकाश डालता है। भारत, प्राचीन काल से ही बहुसांस्कृतिक और बहुभाषिक राष्ट्र रहा है, जिसकी पहचान अनुवाद साहित्य के कारण वैश्विक स्तर पर स्थापित हुई है। अनुवाद केवल भाषाओं के बीच संवाद नहीं, बल्कि भाषा की सौंदर्य चेतना और वैचारिक एकता का सेतु है। यह वेदों, प्राचीन ग्रंथों, और भक्तिकालीन काव्य से लेकर आधुनिक विज्ञान तक के ज्ञान को विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रसारित करता है, जिससे समाज में सहिष्णुता और सामूहिकता का बोध होता है। यह दर्शाता है कि 24 प्रमुख भाषाओं के बावजूद, भारत का मूल चिंतन एक ही है। अनुवाद साहित्य के माध्यम से ही हम क्षेत्रीय और आदिवासी साहित्य की केंद्रीयता को समझते हैं, जिससे भारतीयता की मूल अवधारणा का विकास होता है और यह विश्व संस्कृति को संबोधित करता है। अनुवादक इस प्रक्रिया का अहम हिस्सा है।

KEYWORDS:

भारतीय भाषाएँ, अनुवाद साहित्य, बहुभाषिकता, वैचारिक एकता, विविधता में एकता.

भाषा की सौंदर्य चेतना,
दर्शाता अनुवाद है।
दो भाषाओं से आपस का
यहां प्यार संवाद है।।

भारत एक ऐसा राष्ट्र है, जो प्राचीन काल से लेकर आज तक विविधता में एकता का प्रतीक है। एक बहुसांस्कृतिक और बहुभाषिक राष्ट्र रहा है। यही हमारी भारतीयता की वैश्विक स्तर पर पहचान की महक फैला रहा है। और इसका कारण है बहुभाषिकता का अनुवाद

साहित्य।

श्रेष्ठ साहित्य मनुष्य को जीने का सही रास्ता दिखाता है। और भारत एक वेदभूमि है, वेदों का ज्ञान ही विज्ञानों द्वारा अनुवाद साहित्य के माध्यम से भारतीय विविध भाषाओं में विभिन्न रूपों का आकार ग्रहण करता है। और भारतीय समाज में सहिष्णुता का परिचय दिया है। भारत उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक की भाषाएँ देश की संस्कृति एवं वैचारिकता का अंतःसंबंध है। यही संबंध अनुवाद साहित्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अनुवाद साहित्य से हम जान सकते हैं कि, मूल ज्ञान एक ही है। भारत में प्रमुख 24 भाषाएं हैं लेकिन मूल चिंतन एक ही है।

'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के 'ट्रांसलेशन' का हिंदी पर्याय है। इस शब्द की उत्पत्ति 'अनु' उपसर्ग पूर्व 'वद' धातु से 'अ' प्रत्यय जोड़कर हुई है। अतः अनु का अर्थ है 'बाद में' और 'वद' का अर्थ बोलना या कहना है। अतः अनुवाद का अर्थ होता है किसी कथन को दूसरे शब्दों में कहना। ऐसा प्रतीत होता है कि, भारतीय भाषाओं में अनुवाद साहित्य स्पष्टीकरण के लिए ही प्रचलित है। यह भारतीय भाषाओं में मौलिकता का कार्य ही है। अनेक भारतीय भाषी साहित्यकारों के साथ-साथ पाश्चात्य साहित्यकारों ने भी 'अनुवाद' को अमूल्य योगदान दिया है। क्योंकि उनका मानना है कि, विविध भाषी साहित्य को उजागर करने का कार्य 'अनुवाद' ही एक ऐसी धारणा है जो जागृतीकरण (वैश्वीकरण), उदारीकरण और निजीकरण के कारण सारा विश्व एक दिखाई देता है। अनेक प्राचीन ग्रंथ हों, भक्तिकालीन काव्य हो अथवा आधुनिक तंत्रज्ञान के ज्ञान – विज्ञान हों, सारा श्रेय 'अनुवाद साहित्य' को ही जाता है। और मनुष्य की सामाजिक अभिव्यक्ति को पूर्णत्व प्राप्त होता है। अनुवाद द्वारा ही हम अन्य देशी-विदेशी भाषाओं के साहित्य से परिचित होते हैं। उदाहरणार्थ- भारतीय अनेक भाषाओं में अनेक काव्य, ग्रंथ, गद्य – पद्य जैसे अनेक विधाएं लिखी गई हैं।

जैसे कि:

केरल में नारायणदास, तमिल में अल्लूर, कन्नड़ में बसवेश्वर, मराठी में संत तुकाराम – ज्ञानेश्वर, राजस्थानी में मीराबाई, पंजाब में गुरुनानक, हिंदी में अंडाल, इन सभी आदि प्रमुख संतों ने अपनी-अपनी

भाषाओं में भक्ति – चिंतन स्थापित किया, भक्ति साहित्य लिखा गया। इसमें प्राकृतिक भिन्नता है, लेकिन भले ही भाषा अलग हो पर अनुवाद से यह पता चल जाता है कि भक्ति ने भारतीय मनुष्य को जोड़कर रखा है।

भारतीय भाषाओं में अनुवाद साहित्य ऐसी चेतना है। जब हम आधुनिकता का अध्ययन करते हैं तो, प्राचीनता की व्यापक प्रवृत्ति परंपराओं को देखते हैं- उदाहरणार्थ- वाल्मीकि की रामायण, कालिदास का रघुवंश और भवभूति का उत्तर रामचरित को देखना ज़रूरी है। आधुनिक काल में भी अनेक साहित्यिक कृतियां अपनी मूल प्रेरणा प्राचीन वाङ्मय से प्राप्त करती हैं। उसी तरह नवजागरण काल में भी सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य में एक जैसी आधुनिक चेतना का प्रसार हुआ है। और बहुभाषिकता में भी भारतीय साहित्य अनुवाद के माध्यम से स्मरणीय अभिव्यक्ति रही है। अनुवाद माध्यम से द्विभाषी अथवा अंतरभाषी संवाद स्थापित करने में मदद मिलती है। भारतीय भाषाओं में रचित साहित्यों का भंडार अनुवाद से ही ज्ञानप्रसार करने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

'अनुवाद' ऐसी संकल्पना है जो भारत जैसे बहुभाषी साहित्य के विचारों को सक्रियता का सेतु बनती है। मनुष्य वर्तमान में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में भी बहुआयामी परिप्रेक्ष्य में उजागरता का स्थान प्राप्त कर रहा है। विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में अपने कार्य को विकसित करने के लिए अनुवाद संवाद बहुमूल्य रहा है।

उदा:

» अनुवाद साहित्य से भारत के सभी भाषाओं के साहित्य में सामाजिक परिवर्तन का बदलाव मिलता है।

» अनुवाद साहित्य से अनेक भाषाओं का महत्व प्राप्त होता है। आदिवासी चेतना की विमर्श विचारधाराओं का महत्व मिलता है। मुख्य प्रादेशिक भाषाओं के साथ-साथ अनेक प्राचीन, आदिवासी उपबोलियों से परिचित हुआ जाता है।

» हर एक भाषा – साहित्य उदाहरणार्थ- हिंदी, मराठी, मलयालम, भोजपुरी, गुजराती, मारवाड़ी जैसे अनेक भाषाओं के गद्य – पद्य

जैसे विधाओं का महत्व, केंद्रीयता की विचारधारा से परिचय एवं ऐतिहासिकता का बोध होता है। चेतना साहित्य रूप अवगत होती है। और अन्य भाषाई साहित्य से प्रभावित होने का सामर्थ्य मिलता है।

» अनुवाद साहित्य से ही भाषागत विविधता, आधुनिकता में प्राचीनता का प्रभाव मिलता है।

इसी से 'ये विश्वची माझी घर' (यह विश्व ही मेरा घर है) का बोधज्ञान का एहसास हो जाता है।

भारतवर्ष अनेक भाषाओं का विशाल देश है। हर एक भाषा के लिए एक स्वतंत्र सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक महत्व है। अलग-अलग प्राचीन वाङ्मयों से भरपूर ज्ञानसागर का प्रलय उसमें समाविष्ट है। भारत की मूलभूत अवधारणा प्राचीन से विकसित और पल्लवित विभिन्न भाषाओं के सामूहिक स्वरूप से उत्पन्न हुई है। इसके कारण ही भारत सभ्यता, संस्कृति, साहित्य तथा दार्शनिक पद्धतियों के प्रति आदरणीय है। वैश्विक स्तर पर वही वैविध्यपूर्णता सकारात्मक भूमिका निभाती आ रही है। इसलिए भारत बहुभाषिकता – लोकतांत्रिक स्वरूप में विविधता – विभिन्नता का स्थान अनेकता में एकता का है। निरंतर धाराओं से गतिमान होने का श्रेय मिला है।

भारतीय संविधान में 22 भाषाओं के अतिरिक्त अन्य उपभाषाओं में लिखित और मौखिक में साहित्य से भरा भंडार भारतीय समाज को चित्रित करता है। भारतीय बहुभाषा साहित्य के साथ-साथ अस्मिताओं को भी प्रदर्शित करता है। यही विश्व को भारत की देन है। और इसका सारा श्रेय अनुवादक को ही जाता है। एक सफल अनुवादक ही 'अनुवाद' के माध्यम से प्रसारित करता है। स्रोत भाषा को लक्ष्य भाषा में केंद्रित रखकर मूल साहित्य से प्रभावित करता है। इससे बहुभाषी में अनुवाद साहित्य प्रमाणित होता है।

निष्कर्ष:

भारत अन्य देशों की तुलना में एक विशाल राष्ट्र है, विशाल राष्ट्र के साथ-साथ प्राचीनता से ही बहुभाषी साहित्य का भी धनी रहा है। भारत पूर्व – पश्चिम, उत्तर – दक्षिण के क्षेत्र में फैला है। जिस तरह फैला

है उतना ही सांस्कृतिक – विभिन्नता से, पुरातन – प्राचीन, वैदिक साहित्य से भी भरपूर है।

उपरोक्त विवेचन से हम यह कह सकते हैं कि, बहुभाषी भारतीयता की मूल अवधारणा का विकास अनुवाद की भूमिका अहम् (अहम) है। इसके आधार पर ही विश्व – संस्कृति का विकास हो रहा है। भारतीय साहित्य, संस्कृति तथा मानव सभ्यता को संबोधित करता है। और विश्व भर में भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जो इतनी विभिन्न भाषाओं में विभिन्न लेखन करता है। और वर्तमान में अनुवाद की आवश्यकता बढ़ गई है।

संदर्भ:

1. भारतीय साहित्य और अनुवाद
2. अनुवाद विज्ञान की भूमिका
3. वैश्विक संदर्भ में अनुवाद की भूमिका
4. अनुवाद का नया विमर्श

Funding:

This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.